विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,नई दिल्ली एवं

श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय,माजलगांव

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

द्वि - दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"स्त्री-लेखन : सृजन के विविध आयाम"

तिथि ३० सितम्बर तथा ०१ अक्तुबर २०१३

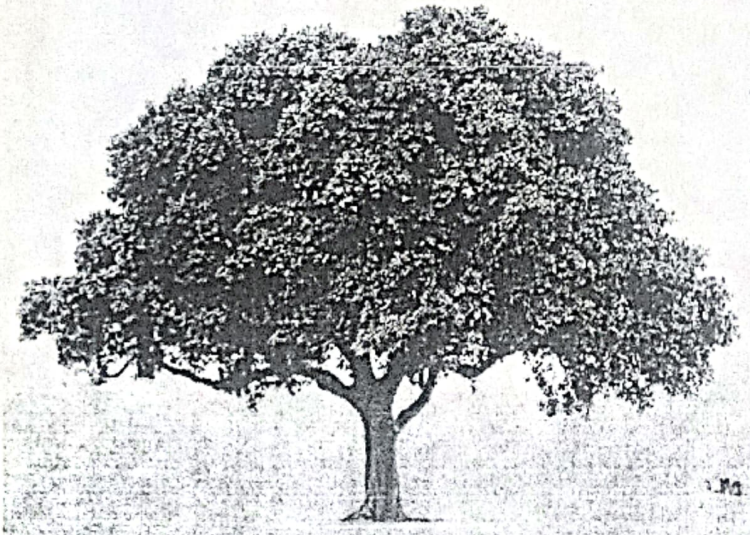

संयोजक

हिन्दी विभाग

श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय,माजलगांव

(कला,विज्ञान व वाणिज्य)

ता.माजलगांव जि.बीड ४३१ १३१

ISBN No. 978-1-62951-325-6

E-mail - siddheshwar.college@gmail.com

Website : www.siddheshwarcollege.com

११६

सत्तरोत्तरी महिला लेखिका के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

अनंत वडघणे, डॉ. विनायक शिंदे
[illegible]
हिन्दी विभाग, [illegible]
[illegible]
Email-wadghaneanant@gmail.com

हिन्दी उपन्यासों में जिस तरह काल के अनुरुप उपन्यास के अर्न्तवस्तु में परिवर्तन हुआ है, उतना परिवर्तन हिन्दी की अन्य विधा नहीं कर सकी। हिन्दी उपन्यास की शुरुआत पहले तो मनोरंजन तथा तिलस्मी, ऐयारी से हुई और बदलते समय के साथ राष्ट्रीय अंदोलन, देश विभाजन, ग्रामीण जीवन, शहरी जीवन से लेकर साठ के बाद उसमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, मुस्लिम विमर्श, आदिवासी विमर्श को समावेश हुआ है। आज के भूमण्डलीकरण,निजीकरण एवं बाजारीकरण के युग में नये मूल्यों को भी उसने स्थान दिया है। इस तरह लम्बे सफर तय करनेवाली यह उपन्यास विधा मनुष्य के अर्न्तमन को अभिव्यक्ति देने में भी सफल हुई है। इसमें दुनिया की आधी आबादी नारी को लेकर भी बहुत सारा लेखन कार्य हुआ है। जिसमें स्त्री लेखिका का के रुप में कई नाम सामने आ गये। इस कारण नारी का समस्त जीवन एक सच्चाई के साथ सामने आ गया। इसी नारी विमर्श के सन्दर्भ प्रसिध्द महिला उपन्यासकार सूर्यबाला कहती है-"मेरी दृष्टि में नारी विमर्श का अर्थ स्त्री का मन,स्त्री की सोच दृष्टि, समस्याओं और स्थितियों का विवेचन है"[१]

सत्तरोत्तरी उपन्यास लेखिकाओं में कई नाम सामने आ गए जिन्होंने नारी के समस्त जीवन को लेकर लेखन किया। जिसमें समाज व्यवस्था द्वारा पीड़ित नारी है, जो नरकीय यातनाएँ झेल रही है। जो किसी बन्धन में नहीं बन्धना चाहती है। स्वयं अपने बलबुते पर खड़ी हो जाती है। प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नायिका प्रिया पति नरेंद्र से बार-बार पैसों की मांग करने की बजाएँ खुद व्यवसाय करती है। वे कहती है-छमैं व्यवसाय रुपये के लिए नहीं कर रही। हाँ चार साल पहले काम शुरु किया था , मुझे रुपयों की भी जरुरत थी। पर आज मेरा व्यवसाय मेरी आईडेंटिटी है।"[२]

वर्तमान समय में पुरुष के समान ही स्त्री भी परिवार चलाती है। उषा प्रियंवदा ने 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' में परिवार की जिम्मेदारी उठाते हुए अपने भावी प्रेम को भी खो देने की विवशता को उपन्यास की नायिका सुषमा के माध्यम से दिखाया है। वह अपने प्रेमी नील से कहती है कि-"पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहनें और भाई सब मुझे ही करना है।"[३] इस तरह परिवार के भरन-पोषण के कारण अपने प्रेमी के साथ जीवन संगिनी बनने में असमर्थ नारी की कथा-व्यथा को भी उपन्यासों में अभिव्यक्ति दी है।

नारी सदा ही पुरुषों के शोषण का शिकार होती आ गई है। कभी वह पति के द्वारा शोषित है, तो कभी देवर,ससुर, तो कभी ऑफिस में काम करनेवाले पुरुषों से इतना ही नहीं आजकल जिसके साथ खुन का रिश्ता है। उसके साथ भी वह सुरक्षित नहीं रही है, पिता, भाई जेसे रिश्ते भी आजकल कमजोर नजर आ रहे है। जिसके साथ प्रेम करती है, उसी से भी शोषित होकर खुद खुशी करती हुई लड़कियाँ हमें वर्तमान समय में दिखाई देती है। ऐसे नारी पात्र के दुःख-दर्द को भी सत्तरोत्तर महिला उपन्यासाकारों ने अपने उपन्यास में स्थान दिया है। 'एक जमीन अपनी ' उपन्यास की पात्र नीता विवाहपूर्व एक शादी -शुदा सुधीर से प्रेम करती है किन्तु वह उसे छोड़ जाता है। नीता अपने व्यथा को स्पष्ट करते हुए कहती है-"देट बास्टर्ड..उसने मुझे छला है..प्रेम-व्रेम कुछ नहीं..काम संबंधों का भूख भेड़िया..आई हेट हिम।"[४]

नारी के जन्म को वर्तमान समय में भी उतना ही दुखदायक माना जाता है। जितना की प्राचीन समय में उसके जन्म को लेकर माना जाता था। आज भी लड़कियाँ के गर्भ को गिरानेवालों की कमी नहीं है। इसी बात का जिर्क करते हुए 'सरला माहेश्वरी' कहती है कि-"मेरा जन्म, मुझे जन्म देनेवाली माँ के चेहरे पर खुशी या गर्व के बजाय निराशा और भय भर देता है। वो माँ जो प्रसव की असहनीय पीड़ा से जूझते हुए एक नये जीवन का सृजन करती है, उस सृजन के प्रति उसके परिवार की बेरुखी उसे अपराधबोध से भर देती है,मुझे जन्म देकर खुद किसी पाप-बोध से भर जाती है।"[५]

LECTURER
M. Dayendeo Mohekar Mahavidyalaya
KALLAM Dist. Osmanabad

...देश में नारी को पार्वती, लक्ष्मी के रुप में भले ही पूजा जाता है किन्तु फिर भी आज पुरुष के बराबर का स्थान नहीं पा सकी है। ...ती व्यवस्था ने सदा ही उसे दुय्यम स्थान दिया है। पत्नी के निधन के बाद पति दूसरा विवाह करने का अधिकारी है किन्तु नारी ...ऐसा अधिकार नहीं। उसे जीवनभर विधवा के रुप में जीवन जीना पड़ता है। इसी बात के विरुध्द आवाज उठाते हुए 'चाक' उपन्यास ...पात्र रेशम कहती है कि-"तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गई हो । मेरे चाल-चलन की झंडी फहरना जरुरी है?..आज को तुम्हारा बेटा मेरी ...गह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था।"[६] इस तरह नारी के अन्तींस्क व्यथा को महिलाओं ने बड़े ही सजगता से ...भिव्यक्ति दी है।

इस तरह सत्तरोत्तर महिला उपन्यासकारों ने नारी के तन-मन को खोलकर रखा है। जिसमे जीतनी वेदना है ,दुख है, उतना ...ी उससे बाहर निकलने के लिए छटपटा है। वह जहां समाज में अच्छाई है उसके लिए वह मर मिटने के लिए तैयार है, उसी तरह बुराई ...के विरुध्द आवाज भी उठाती है तथा न्याय के लिए संघर्ष करती है।

संदर्भ सूची:-

१. हिन्दी उपन्यास में नारी विमर्श-सं.शोभा बेरेकर पृ.१७९
२. छिन्नमस्ता-प्रभा खेतान पृ.१०
३. पचपन खम्भे लाल दीवारें-उषा प्रियंवदा पृ.१०४
४. एक जमीन अपनी-चित्रा मुद्गल पृ.२०१
५. नारी प्रश्न-सरला माहेश्वरी पृ.८५
६. चाक-मैत्रेयी पुष्पा पृ.१९

LECTURER
...M. Dnyandeo Mohekar Mahavidyalaya
KALLAM Dist. Osmanabad